“चुनौतियों का सामना एवं परिवर्तन संचालन: वैश्विक मंचों पर स्वयं सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं की व्यापक समीक्षा”

HEINRICH BÖLL STIFTUNG
REGIONAL OFFICE NEW DELHI

"चुनौतियों का सामना एवं परिवर्तन संचालन: वैश्विक मंचों पर स्वयं सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं की व्यापक समीक्षा"

HEINRICH BÖLL STIFTUNG
REGIONAL OFFICE NEW DELHI

"चुनौतियों का सामना एवं परिवर्तन संचालन: वैश्विक मंचों पर स्वयं सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं की व्यापक समीक्षा"

लेखक: वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)

सितंबर 2023

कॉपीराइट (सी) वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया
प्रकाशक की स्वीकृति के साथ इस पुस्तक की विषय वस्तु को पूर्ण या आंशिक रूप से पुन: प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रकाशन:
वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)
वाणी हाउस, 7, पीएसपी पॉकेट,
सेक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली 110 077
फ़ोन: 91- 11 - 49148610, 40391661, 40391663
ई-मेल: info@vaniindia.org
वेबसाइट: www.vaniindia.org

@TeamVANI @vani_info @VANI India @VANI Perspective

डिज़ाइन - शेड्स

अस्वीकरण: यह प्रकाशन हेनरिक बॉल स्टिफ्टंग के सहयोग से तैयार किया गया था। प्रकाशन में शामिल विचार और विश्लेषण लेखक के हैं और जरूरी नहीं कि वे फाउंडेशन के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हों।

प्रस्तावना

पच्चीस साल पहले, बीजिंग, चीन में, दुनिया ने एक प्रण लिया था: हर क्षेत्र में, महिलाओं और लड़कियों को समान अधिकार और अवसर प्रदान किये जाये। 1995 में महिलाओं पर आधारित यह चौथा विश्व सम्मेलन था; 189 देशों के 30,000 से अधिक कार्यकर्ता और प्रतिनिधि इस बात पर वार्तालाप करने के लिए एकत्र हुए कि विश्व में लैंगिक समानता लाने के लिए क्या करना होगा। साथ ही, उन्होंने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर अब तक का सबसे व्यापक एजेंडा, बीजिंग घोषणा और कार्रवाई के लिए मंच बनाया। तब से, कई नए और शक्तिशाली वैश्विक मंच उभरे हैं, जो महिला नेताओं को वैश्विक मंचो में शामिल होने का अवसर प्रदान कर रहे है।

भारत में, विकास क्षेत्र से जुड़ी महिलाएं जमीनी स्तर पर, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हालाँकि, विभिन्न चुनौतियों के कारण वैश्विक मंचों पर उनकी भागीदारी सीमित है। इसलिए, वाणी ने वैश्विक मंच पर महिला नेताओं की भागीदारी के दायरे का विश्लेषण करने के लिए एक अध्ययन किया। यह रिपोर्ट भारत में समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं के अनुभवों को दर्शाती है, जिन्होंने इन चुनौतियों को पार किया और वैश्विक मंचों को भी प्रभावित किया ।

वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, यह इन नेताओं को भारत में महिलाओं और अन्य हाशिए पर रहने वाले समूहों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर अपने अनुभव और दृष्टिकोण साझा करने का अवसर प्रदान करता है। इससे वैश्विक नीतियों और पहलों के निर्माण में मदद मिल सकती है जो इन समुदायों की जरूरतों के अनुसार अधिक संवेदनशील हों।

दूसरे, यह भारत की महिला नेताओं को दुनिया भर के अन्य समाज सेवी कार्यकर्ताओ के साथ नेटवर्क बनाने और सहयोग देने का रास्ता बनाता है। इससे, उनके संगठनों और कार्यो को मजबूत बनाने और अन्य संदर्भों में संसाधनों और विशेषज्ञताओ का लाभ उठाने में मदद मिल सकती है।

अंत में, वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी भारतीय स्वयं सेवी क्षेत्र की प्रत्यक्षता/मौजूदगी एवं आवाज को अधिक व्यापक और समावेशी रूप से सुनिश्चित करने में मदद करती है। भारत और विदेशो में समाज सेवी क्षेत्र द्वारा सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों को बढ़ाने के लिए इन नेताओं और उनके संगठनों के कामो को प्रदर्शित करके सहयोग एवं एकजुटता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

यह रिपोर्ट विभिन्न वैश्विक प्लेटफार्मों पर सीएसओ में महिला नेताओं की भागीदारी का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह मूल्यांकन करना है कि वैश्विक स्तर पर निर्णय प्रक्रियाओं में इन नेताओं का कितना प्रतिनिधित्व किया जाता है और उनके विचारो को महत्व दिया जाता है।

यह रिपोर्ट उन चुनौतियों और बाधाओं पर भी विचार करती है जिनका सामना सीएसओ महिला नेताओं को वैश्विक मंचो तक पहुंचने और भाग लेने पर करना पड़ता है। यह उन संस्थागत और सांस्कृतिक बाधाओं का मूल्यांकन भी करती है, जो उनकी भागीदारी में बाधा डालती हैं और साथ ही, उन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों पर भी विचार विमर्श करती है, जो उनकी भागीदारी को सीमित करते हैं।

इस अध्ययन के लिए, शोध समूह ने उपलब्ध साहित्य की व्यापक समीक्षा की और समाज सेवी क्षेत्र की प्रतिष्ठित महिला नेताओं के साक्षात्कार किये और चर्चा की। यह रिपोर्ट निष्कर्षों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है और वैश्विक स्तर पर निर्णय प्रक्रिया में महिला नेताओं की भागीदारी को सुधारने के लिए सुझाव प्रदान करती है।

अंत में, मैं वाणी के सहयोगी संगठन हेनरिक बॉल स्टिफ्टंग (एचबीएस) को उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।

भवदीय,

हर्ष जेटली,
सीईओ, वाणी

आभार

वाणी, समाज सेवी क्षेत्र में कार्यरत इन असाधारण महिला नेताओं की दिल से सराहना करता है और उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता है . जिन्होंने इस रिपोर्ट को बनाने और समृद्ध रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी अमूल्य भागीदारी, व्यावहारिक तथ्यों की जानकारी, निरंतर मार्गदर्शन एवं सहयोग ने हमारे शोध में गहराई एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने में सहायता प्रदान की हैं।

विषय वस्तु:

क्रम सं	अध्याय	पृष्ठ सं
1.	पृष्ठभूमि	2
2.	कार्यप्रणाली	2
3.	वैश्विक स्तर पर महिलाओं की भागीदारी में बाधाएँ	3
4.	महिला सशक्तिकरण	6
5.	लैंगिक मुख्य धारा	7
6.	नेटवर्क और साझेदारी	8
7.	वैश्विक मंचों पर महिलाओं की भागीदारी का प्रभाव	9
8.	निष्कर्ष	10
9.	आगे का रास्ता	11
10.	संदर्भ	12

यह रिपोर्ट विभिन्न वैश्विक प्लेटफार्मों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी और नीति-निर्माण और निर्णय प्रक्रियाओं पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करती है। यह आज की दुनिया में कई कारणों से प्रासंगिक है।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और शिखर सम्मेलन जैसे वैश्विक मंच समाज सेवी क्षेत्र के नेताओं को एक दूसरे से मिलने, ज्ञान साझा करने और उनकी निर्णय क्षमता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, इन मंचो पर महिलाओं की भागीदारी ऐतिहासिक रूप से सीमित रही है, और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए उन कारकों को समझना महत्वपूर्ण है जो उनकी भागीदारी में योगदान करते हैं या बाधा डालते हैं।

इसके अतिरिक्त, वैश्विक स्तर पर महिलाओं को नेतृत्व एवं भागीदारी में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। समाज सेवी क्षेत्र में वैश्विक मंच पर महिला नेताओं की भागीदारी का अध्ययन करना, उनकी चुनौतियों को समझने और उनके नेतृत्व को बढ़ावा देने की दिशा में, एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस अध्ययन की पृष्ठभूमि इस मान्यता पर आधारित है कि लैंगिक समानता और दीर्घकालीन विकास प्राप्त करने के लिए महिला नेतृत्व और निर्णय की भागीदारी महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में विकास के बावजूद, अभी भी महिलाओं को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय, दोनों स्तरों पर राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है।

समाज सेवी संस्थान, महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वैश्विक मंचों जैसे यू एन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन मंचो पर महिलाओं की भागीदारी, उनकी चुनौतियाँ, नीति-निर्माण एवं निर्णय प्रक्रियाओं में उनके प्रभाव का विश्लेषण करना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी को बढ़ावा देने, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए रणनीतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करना भी है। यह महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि यह उन नीतियों एवं कार्यक्रमों के बारे में बताता है जो महिला नेतृत्व और निर्णय प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देते हैं, फलस्वरूप, एक समावेशी और न्यायसंगत समाज के निर्माण में योगदान करते हैं।

कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में गुणात्मक शोध पर आधारित दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है, जिसमें वैश्विक मंचों पर भाग लेने वाली समाज सेवी क्षेत्र की दस महिला नेताओं के साथ साक्षात्कार आयोजित किये गए। ये साक्षात्कार ज़ूम का उपयोग करके ऑनलाइन किए गए थे और प्रतिभागियों का चयन वैश्विक मंचो पर उनकी विशेषज्ञता और अनुभव के आधार पर किया गया था। इसके अतिरिक्त, "समाज सेवी क्षेत्र", "महिला नेता," "वैश्विक मंच," और "भागीदारी" जैसे की-वर्ड का उपयोग करके गूगल एवं शैक्षिक डेटाबेस में व्यापक खोज द्वारा यह समीक्षा निर्माण किया गया।

वैश्विक स्तर पर महिलाओं की भागीदारी में बाधाएँ:

हाल के वर्षों में, वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी ने ध्यान आकर्षित किया है। निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं की भूमिका और वैश्विक विकास में उनके योगदान को मान्यता दी गई है, और यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महिला सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है।

हालाँकि, तथ्यों ने उन बाधाओं को भी उजागर किया है, जिनका सामना महिलाओं को वैश्विक मंचों अथवा समाज सेवी क्षेत्र में भागीदारी पर करना पड़ता है। इन बाधाओं में शामिल हैं - सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड/ प्रचलन जिसमे महिलाओं को केवल देखभालकर्त्ता के रूप में मान्यता देना, उच्च शिक्षा तक पहुंच में कमी, शादी एवं प्रजनन की "सही उम्र" वाली मानसिकता और संसाधनों तथा प्रौद्योगिकी/ टेक्नोलॉजी तक सीमित पहुंच आदि। निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं का सीमित प्रतिनिधित्व और समाज सेवी संस्थानों में उनका हाशिए पर होना भी महत्वपूर्ण बाधाओं के रूप में माना गया है। ये चुनौतियाँ अक्सर व्यवस्थात्मक असमानताओं और सामाजिक मानदंडों में मिश्रित होती हैं। निम्नलिखित अनुभाग में विकास क्षेत्र में वैश्विक मंचो पर भारतीय महिला नेताओं की भागीदारी में आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियों एवं बाधाओं पर चर्चा की गई है:

- **लैंगिक पक्षपात और रूढ़िवादिता**: गंभीर लैंगिक पक्षपात एवं रूढ़िवादिता, भारतीय महिला नेताओं के अंतरराष्ट्रीय अवसरों को सीमित करती है। रूढ़िवादी मान्यताएं कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में कम सक्षम या जानकार हैं, वैश्विक मंचों पर उनकी विश्वसनीयता और प्रभाव को कमजोर करती हैं।

- **सांस्कृतिक और धार्मिक मानदंड**: महिलाओं की भूमिकाओं के संबंध में सामाजिक मानदंड और अपेक्षाएं वैश्विक मंचों पर उनकी भागीदारी में बाधा डालती हैं। रूढ़िवादी सांस्कृतिक और धार्मिक मानदंड, जैसे कि एक महिला को पूरे परिवार की देखभाल करनी चाहिए, एक महिला को ज़ोर से नहीं बोलना चाहिए या कम बोलना चाहिए, अंतरराष्ट्रीय मंचों सहित सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की गतिशीलता, दृश्यता और आवाज़ में बाधा उत्पन्न करते हैं।

इसके अतिरिक्त, भारतीय संदर्भ में, एक महिला नेता की सफलता अक्सर उसके पिता या पति की खुली मानसिकता से जोड़ी जाती है।

- **संसाधनों तक सीमित पहुंच**: आर्थिक असमानताएं और सीमित संसाधन महिलाओं की वैश्विक भागीदारी को प्रभावित करती हैं। यात्रा खर्च, व्यावसायिक विकास के अवसर और नेटवर्क फैलाव असमान रूप से वितरित किये जाते है, जिससे निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं को अवसर नहीं मिल पाते है।

- **कार्य-जीवन संतुलन**: पेशेवर प्रतिबद्धताओं के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करना दुनिया भर में महिला नेताओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अक्सर घर से दूर लंबी यात्रा और समय की आवश्यकता होती है, भारतीय संदर्भ में, महिलाओं के लिए पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ यह एक अतिरिक्त भार है ।

- **नेटवर्किंग और मेंटरशिप अंतराल**: नेटवर्किंग और मेंटरशिप कैरियर की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, कम प्रतिनिधित्व वाली पृष्ठभूमि की महिला नेताओं के पास मार्गदर्शन और नेटवर्किंग के अवसर सीमित है, जिनके द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनकी भागीदारी को सुविधाजनक बनाया जा सकता है।

- **अंतर्निहित पक्षपात और सूक्ष्म आक्रामकता**: भारतीय समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं को उनके लिंग एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर पक्षपात और आक्रामकता का सामना करना पड़ता है। यह भेदभाव शत्रुतापूर्ण वातावरण का निर्माण करते हैं और वैश्विक मंचों पर उनकी प्रभावी योगदान क्षमता को बाधित करते हैं।

- **आत्मविश्वास और आत्मपक्ष की कमी**: महिला नेता सामाजिक अवधारणाओं को अंतर्निहित कर लेती हैं जो उनके आत्मविश्वास और उनकी क्षमताओं को कमजोर कर देते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय मंच पर बोलने अथवा नेतृत्व में संदेह एवं अनिच्छा की स्थिति पैदा होती है। जिन पारंपरिक जिम्मेदारियों का महिलाओं पर बोझ होता है, वे उन्हें स्व मूल्यांकन एवं उनकी क्षमताओं पर संदेह करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे उनके नेतृत्व में बाधा उत्पन्न होती है।

- **राजनीतिक और संरचनात्मक बाधाएँ**: कुछ मामलों में, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और मंचो में राजनीतिक और संरचनात्मक बाधाएँ लैंगिक असमानताओं को स्थायी बना देती हैं। इन संगठनों में नेतृत्व पदों पर महिलाओं का सीमित प्रतिनिधित्व निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

"दुनिया की नजरों में महिलाएं कमजोर होती हैं, और वे पारंपरिक घरेलू और देखभाल कार्यों के लिए उपयुक्त हैं।"

- साक्षात्कार प्रतिवादी

"एक विवाहित महिला पूरे भारत या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यात्रा करने और भाग लेने में सक्षम है, केवल इसलिए क्योंकि उसके पिता/पति खुले विचारों के हैं और उन्हें बाहर जाने की अनुमति देते हैं"

- साक्षात्कार प्रतिवादी

महिला सशक्तिकरण

वैश्विक स्तर पर महिला नेताओं की भागीदारी बढ़ाने में सशक्तिकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सशक्तिकरण मे महिलाओं को उपकरण, संसाधन, कौशल और अवसर प्रदान करना शामिल है, जो उन्हें सूचना, निर्णय क्षमता और अंतरराष्ट्रीय मंचो सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से योगदान करने के लिए आवश्यक है। जब महिला नेताओं को सशक्त बनाया जाता है, तो वे बाधाओं और चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार होती हैं, जिससे वे वैश्विक मंच पर प्रभावशाली और सक्षम होती हैं। साक्षात्कारो के अनुसार, सशक्तीकरण ने साक्षात्कारकर्ताओं को निम्नलिखित तरीकों से सहायता की और वे वैश्विक स्तर पर महिला नेताओं की भागीदारी बढ़ाने में और भी अधिक योगदान दे सकते हैं:

- **आत्मविश्वास और आत्म-क्षमता**: आंकड़ों से पता चलता है कि सशक्त महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्म-क्षमता अधिक पाई जाती है। परिणामस्वरूप, वे आगे बढ़ने, अपने विचार साझा करने और अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम रही है, यहां तक कि पुरुष-प्रधान या पारंपरिक स्थानों में भी। इसके अतिरिक्त, वे भारतीय समाज सेवी क्षेत्र में भी अपने लिए जगह बनाने में सक्षम रही, जिसका उन्हें लाभ हुआ और उन्हें वैश्विक मंच का हिस्सा बनने के अवसर प्राप्त हुए।
- **शिक्षा और ज्ञान**: सशक्तिकरण अक्सर शिक्षा से शुरू होता है। उत्तम शिक्षा और सूचना तक पहुंच ने इन दस महिला नेताओं को वैश्विक मुद्दों पर सार्थक बातचीत में शामिल होने के लिए आवश्यक ज्ञान और विशेषज्ञता प्रदान की, जिससे वे अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली भागीदार बन पाई।
- **नेटवर्किंग और मेंटरशिप**: सभी साक्षात्कारों को नेटवर्क बनाने और अनुभवी पेशेवरों से मेंटरशिप प्राप्त करने के अवसर मिले । इन संपर्कों ने उन्हें वैश्विक मंचो की मुश्किलों से निपटने, मार्गदर्शन प्रदान करने और अंतरराष्ट्रीय अवसर प्राप्त करने में मदद की।
- **कौशल विकास**: महिलाओं को यह विश्वास दिलाया जाता रहा है कि उनकी राय मायने नहीं रखती और उन्हें कम बोलना चाहिए। परिणामस्वरूप, महिलाओं में आत्मविश्वास और अनिवार्य कौशल की कमी होती चली गई और इसी कारण से उन्हें नेतृत्व भूमिकाओं के लिए अयोग्य माना जाता रहा। इस संदर्भ में, एक सुझाव जो सभी प्रतिक्रियाओं में आम था, वह नेतृत्व कौशल, सार्वजनिक भाषण, बातचीत और कूटनीति निर्माण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व पर आधारित था, जिससे वैश्विक स्तर पर महिला नेताओ में अपने दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने और वकालत करने की क्षमताओं में वृद्धि हो सकती है।
- **कानूनी और नीति सहयोग**: सशक्तिकरण में कानूनी और नीतिगत बदलावों की वकालत करना भी शामिल है जो लैंगिक समानता और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। कानूनी तंत्र जो समान प्रतिनिधित्व का समर्थन करते हैं और भेदभाव से सुरक्षा प्रदान करते हैं, वह महिला नेताओं के लिए एक सक्षम वातावरण बना सकते हैं।
- **सांस्कृतिक परिवर्तन**: सशक्त महिलाएँ महिलाओं की भूमिकाओं और भागीदारी को सीमित करने वाले सांस्कृतिक मानदंडों को चुनौती देती हैं और उनमें बदलाव लाती हैं। महिलाओं की क्षमताओं के बारे में सामाजिक धारणाओं को बदलकर और महिलाओं को सशक्त बनाकर समावेशी वैश्विक मंच बनाये जा सकते हैं।
- **वकालत और जागरूकता**: ये सशक्त महिला नेता लैंगिक समानता और महिला अधिकारों की वकालत करने में सबसे आगे रहती हैं। इस प्रक्रिया में, वे वैश्विक मुद्दों पर महिलाओं की आवाज़ के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाता हैं, जिससे दूसरे लोगो को उनकी भागीदारी में सहयोग करने की प्रेरणा मिलती है।
- **रोल मॉडलिंग**: जिन महिला नेताओं का साक्षात्कार लिया गया, वे निश्चित रूप से अगली पीढ़ी के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करेंगी। उनकी उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि महिलाएँ वैश्विक मंचों पर उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं, अन्य महिलाओं को नेतृत्व भूमिका निभाने और अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- **समावेशिता और विविधता**: सशक्तिकरण पहल समावेशिता और विविधता के महत्व पर जोर देती है। जब वैश्विक मंचों पर अधिक विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जाते हैं, तो चर्चाएँ अधिक समृद्ध, व्यापक एवं जटिल वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल हो जाती हैं।
- **एजेंडा पर अधिकार**: सशक्तिकरण महिला नेताओं को वैश्विक मंचों पर अपने एजेंडे को आकार देने और प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। जब उनके मुद्दों में अधिकार की भावना होती है, जिन्हे वह सहयोग करती हैं, तो उन में जुनून और प्रतिबद्धता देखने को मिलती है, जो ध्यान और सहयोग आकर्षित करती है।

लैंगिक मुख्य धारा

लैंगिक मुख्यधारा को वैश्विक मंचों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में जाना जाता है, जिसमें नीति और निर्णय प्रक्रियाओं के सभी पहलुओं में लैंगिक दृष्टिकोण को एकरूपता देना शामिल है। पिछले अध्ययनों में भी लिंग-संवेदनशील नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है, जो लैंगिक असमानता के मूल कारणों को प्रस्तुत करते हैं और महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करते हैं। प्रतिभागियों ने कुछ प्रथाओं को साझा किया, जो लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए हर संगठन/ संस्थान में अपनायी जा सकती है।

सबसे पहले महत्वपूर्ण है कि संगठनों में नेतृत्व और अंतरराष्ट्रीय मंच भागीदारी में व्याप्त लैंगिक असमानताओं को पहचाना जाये । ऐसा देखा जाता है कि ऐसे मंचों पर महिलाओं को कम प्रतिनिधित्व के अवसर प्रदान किये जाते है और उन्हें कम महत्व दिया जाता है। इस असंतुलन को ठीक करने की आवश्यकता है। यह ऐसी नीतियों और कार्यक्रमों के विकास के लिए प्रोत्साहित करता है, जो अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में महिला नेताओं को शामिल करने को बढ़ावा देते हैं। इसमें लिंग प्रतिनिधित्व लक्ष्य निर्धारित करना, परामर्श कार्यक्रम और महिला भागीदारी के लिए संसाधन प्रदान करना शामिल है।

ऐसी नीतियां यह भी सुनिश्चित करती हैं कि यात्रा, प्रशिक्षण और नेटवर्किंग के अवसरों के लिए धन संसाधन, पुरुष और महिला नेताओं के बीच समान रूप से आवंटित किए जाये। इससे उन वित्तीय बाधाओं को दूर करने में मदद मिलती है जो महिलाओं की भागीदारी में बाधा बनती हैं। क्षमता निर्माण जो महिला नेताओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी ढंग से जुड़ने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करती है, नियमित आधार पर आयोजित किया जाना चाहिए।

लैंगिक मुख्यधारा की यह प्रथा, संगठनों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर चर्चा में लिंग-विशिष्ट मुद्दों और दृष्टिकोणों पर विचार प्रस्तुत करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। इससे अधिक व्यापक और प्रासंगिक समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं जो महिलाओं और पुरुषों दोनों की जरूरतों को पूरा करेंगे । यह चुनौतियों का मुकाबला करने और महिला भागीदारी को सीमित करने वाली रूढ़िवादिता को तोड़ने में भी बहुत योगदान पूर्ण साबित होगा।

एक अन्य सुझाव में, महिलाओं की नेतृत्व क्षमताओं पर जोर देना और उनकी सफलताओं को उजागर करना शामिल है, जिससे धारणाओ और विचारो में बदलाव लाये जा सकते है। इसके लिए संगठनात्मक संस्कृति, नीतियों और प्रथाओं में बदलाव करने की आवश्यकता है जो लैंगिक असमानताओं को बनाये हुए हैं। साक्षात्कारकर्ताओं ने इन उपायों को अपने कार्यक्षेत्र में अपनाया, जिससे उनके संगठनों में निर्णय निर्माताओं के दृष्टिकोण और व्यवहारो में बदलाव देखा गया, जिनसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महिला नेताओं की भागीदारी को सहयोग मिला।

लैंगिक मुख्यधारा द्वारा लैंगिक समानता सिद्धांतों को संगठनों और संस्थानों में शामिल करके स्थायी परिवर्तन लाये जा सकते है । इससे एक स्थायी वातावरण को बढ़ावा मिलेगा, महिला नेताओं की भागीदारी अपवाद के बजाय आदर्श बन जाएगी।

नेटवर्क और साझेदारियाँ

क्षेत्र की महिला नेताओं ने वैश्विक मंचों पर महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिए नेटवर्क और साझेदारी के महत्व पर जोर दिया। निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व और भागीदारी को बढ़ाने के लिए सीएसओ, सरकारों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग को एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में पहचाना गया। ये सहयोग महिलाओं को संसाधनों, सहायता, परामर्श और अवसरों तक पहुंच प्रदान करते हैं जो वैश्विक मंच पर प्रभावी रूप से जुड़ने की उनकी क्षमता को प्रभावित करते हैं।

नेटवर्क और साझेदारियाँ महिलाओं को आगामी अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों, सम्मेलनों और भागीदारी के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि महिलाएं उन मंचो से अवगत हैं जहां उनकी आवाज़ सुनी जा सकती है। इसके अतिरिक्त, स्थापित नेटवर्क और साझेदारियों में अनुभवी महिला नेता शामिल होती हैं, जो उभरती महिला नेताओं का मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान कर सकती हैं। मेंटरशिप कौशल विकास, आत्मविश्वास और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है। वे सार्वजनिक भाषण, बातचीत, कूटनीति और नीति समर्थन जैसे क्षेत्रों में महिला कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण, कार्यशालाएं और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी भागीदारी के लिए ये कौशल आवश्यक हैं।

इसके अतिरिक्त, ये नेटवर्क महिलाओं की आवाज़ को सामूहिक रूप से उठाने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। सहयोग के माध्यम से, महिलाएं वैश्विक मंच पर अपने दृष्टिकोण और विचारों को प्रस्तुत करने और गंभीरता से लिए जाने के लिए अपने नेटवर्क का लाभ उठा सकती हैं। सहयोगी नेटवर्क सामूहिक रूप से महिला नेताओं के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं, जिससे उन्हें निर्णय धारको के साथ जुड़ने, नीतियों को आकार देने और वैश्विक एजेंडा में अधिक प्रभावी ढंग से योगदान करने में सक्षम बनाया जा सकता है। महिला नेताओं के लिए वैश्विक परिदृश्य पर अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों, संगठनों और हितधारकों के साथ जुड़ने के अवसर भी खुलते हैं। यह उनके पेशेवर नेटवर्क का विस्तार करता है और सहयोग और साझेदारी के द्वार खोलता है।

वे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर महिलाओं की दृश्यता, प्रभाव और भागीदारी बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करते हैं।

वैश्विक मंचों पर महिलाओं की भागीदारी का प्रभाव:

कई अध्ययनों ने वैश्विक मंचों पर महिलाओं की भागीदारी के सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला है। निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता और वैधता बढ़ाने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और दीर्घकालीन विकास लक्ष्यों में योगदान करने के लिए महिलाओं की भागीदारी देखी गई है। वैश्विक मंचों पर महिलाओं की भागीदारी के कुछ प्रमुख सकारात्मक प्रभावों में निम्न शामिल हैं:

* **विविध दृष्टिकोण:** महिलाओं की भागीदारी वैश्विक चर्चाओं में विविध दृष्टिकोण जोड़ती है, ये ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जिसे अनदेखा किया जाता रहा है। यह विविधता चर्चा को समृद्ध बनाती है और अधिक व्यापक तथा सर्वांगीण समाधान प्रदान करती है।

* **समावेशी नीतियां**: महिलाएं अक्सर उन नीतियों का समर्थन करती हैं जो वंछित समुदायों की जरूरतों को पूरा करती हैं, जिससे अधिक समावेशी और न्यायसंगत परिणाम प्राप्त होते हैं। उनके दृष्टिकोण ऐसी नीतियों में योगदान करते हैं जो सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और दीर्घकालीन विकास को बढ़ावा देती हैं।

* **विवाद समाधान**: महिलाओं की भागीदारी बेहतर विवाद समाधान एवं परिणामों से जुड़ी हुई है। सहयोग, सहानुभूति और संपर्क स्थापित करना तनाव को कम करने और चुनौतीपूर्ण स्थितियों से निपटने में मदद करता है।

* **लिंग-संवेदनशील समाधान**: महिला नेताओं द्वारा लिंग-संवेदनशील नीतियों और कार्यक्रमों का समर्थन करने की संभावना अधिक होती है, जो सीधे तरीके से महिलाओं और लड़कियों को लाभान्वित करती हैं। इससे दुनिया भर में महिलाओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर और सुरक्षा प्रदान की जा सकती है।

* **सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन**: महिलाओं की भागीदारी पारंपरिक लिंग मानदंडों और रूढ़ियों को चुनौती देती है। नेतृत्व और विशेषज्ञता का प्रदर्शन करके महिलाओं की क्षमता और भूमिका के बारे में धारणाओं में बदलाव के लिए प्रेरित किया जा सकता हैं।

* **आर्थिक विकास**: महिलाओं की भागीदारी से अधिक समावेशी आर्थिक नीतियां बनती हैं, जो कार्यबल की सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग करती हैं। जिससे वैश्विक स्तर पर आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा मिलता है।

* **बेहतर शासन**: अध्ययनों से प्रमाण मिलता है कि शासन में महिलाओं की भागीदारी से भ्रष्टाचार कम होता है, जवाबदेही बढ़ती है और सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधार होता है। उनकी उपस्थिति अधिक प्रभावी और पारदर्शी शासन प्रणालियों में योगदान करती है।

* **शैक्षिक उन्नति**: महिला नेता लड़कियों और महिलाओं के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करती हैं, उन्हें शिक्षा और नेतृत्व भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह सशक्तिकरण और शैक्षिक उन्नति के एक सकारात्मक चक्र को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष:

साहित्य समीक्षा और साक्षात्कार उन महत्वपूर्ण बाधाओं को उजागर करते हैं जिनका सामना महिलाये वैश्विक मंच पर निर्णय प्रक्रियाओं में करती है। महिला भागीदारी बढ़ाने के लिए महिला सशक्तिकरण, लैंगिक मुख्यधारा, नेटवर्क और साझेदारी तथा महिला भागीदारी का समर्थन करने वाले सक्षम वातावरण का निर्माण करना आवश्यक है। साहित्य में वैश्विक विकास के लिए महिला भागीदारी के सकारात्मक प्रभाव और निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं के बढ़ते प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है।

विश्लेषण से अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में उनकी भागीदारी में चुनौतिया, अवसर और परिवर्तनशील क्षमता के विषय में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि का भी पता चला। जब हम इस अध्ययन के निष्कर्षों पर विचार करते हैं, कई प्रमुख निष्कर्ष और दूरदर्शी दृष्टिकोण सामने आते है:

मुख्य निष्कर्ष:

- **महत्वपूर्ण प्रभाव**: वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं की भागीदारी का नीतिगत चर्चाओं, निर्णय प्रक्रियाओं और लैंगिक समानता की प्रगति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उनके विविध दृष्टिकोण और अनुभव चर्चा को समृद्ध बनाते हैं और अधिक समग्र और प्रभावी समाधान की ओर ले जाते हैं।

- **चुनौतियों पर काबू पाना**: लैंगिक अवधारणाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और सीमित संसाधनों सहित कई बाधाओं के बावजूद, समाज सेवी क्षेत्र की महिला नेता असाधारण प्रदर्शन, लचीलापन और दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करती हैं। इन चुनौतियों से निपटने की उनकी क्षमता वैश्विक मंच पर सकारात्मक बदलाव लाने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

- **समावेशिता समर्थन**: समाज सेवी क्षेत्र की महिला नेता विविध वर्गों को समायोजित करने वाले समावेशी क्षेत्रों की वकालत करती हैं। उनके समर्थन प्रयास पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देते हैं और ऐसे वातावरण निर्माण के लिए प्रोत्साहित करते हैं जहां महिला भागीदारी को न केवल प्रोत्साहन किया जाता है बल्कि उसका जश्न भी मनाया जाता है।

- **रोल मॉडलिंग**: समाज सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं की उपलब्धियाँ महत्वाकांक्षी महिला नेताओं के लिए शक्तिशाली रोल मॉडल के रूप में काम करती हैं, जो उन्हें बाधाओं को दूर करने और नेतृत्व करने के लिए प्रेरित करती हैं। ये रोल मॉडल आत्मविश्वासी और सशक्त महिलाओं की एक नई पीढ़ी को बढ़ावा देकर प्रभावशाली योगदान प्रदान करती हैं।

- **सहयोगात्मक शक्ति**: नेटवर्क, साझेदारी और सहयोग समाज सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं के प्रभाव को बढ़ाते हैं। ये कनेक्शन महिलाओं को वैश्विक मंचों पर अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ने के लिए आवश्यक संसाधन, मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करते हैं।

आगे का रास्ता:

- दृश्यता बढ़ाना: वैश्विक मंचों पर समाज सेवी क्षेत्र की महिला नेताओं की भागीदारी को आगे बढ़ाने के लिए, मंचो, मान्यता और मीडिया कवरेज के माध्यम से उनकी दृश्यता (विजिबिलिटी) को बढ़ाना प्राथमिकता और आवश्यक है। उनकी कहानियाँ और उपलब्धियाँ व्यापक दर्शकों को प्रेरित कर सकती हैं और लिंग-समावेशी नेतृत्व को प्रदर्शित करती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि उनकी यात्राओं का दस्तावेजीकरण किया जाए और इसे व्यापक दर्शकों तक पहुंचाया जाए, जिससे वैश्विक स्तर पर महिला भागीदारी के संबंध में सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन हो सके।

- क्षमता निर्माण: जब कर्मचारियों की क्षमता निर्माण की बात आती है तो भारतीय समाज सेवी संस्थानों में बहुत कम निवेश किया जाता है। इसका एक बहुत प्रमुख कारण धन की कमी और उपलब्ध सीमित संसाधन हो सकते हैं। हालाँकि, समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं के क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों में निरंतर निवेश उन्हें वैश्विक मंचों पर प्रभावशाली भागीदारी के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करेगा। इन कार्यक्रमों को नेतृत्व विकास, संचार, बातचीत और नीति समर्थन आधारित होना चाहिए। संस्थानों को प्रासंगिक कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए और ऐसे कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

- मजबूत नेटवर्क बनाना: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर समाज सेवी क्षेत्र में महिला नेताओं को सहयोग करने वाले नेटवर्क और साझेदारियों को मजबूत करना, समुदाय की भावना को बढ़ावा देगा, मार्गदर्शन प्रदान करेगा, और ज्ञान तथा सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करेगा। ये नेटवर्क उनकी वैश्विक सहभागिता यात्रा के दौरान सहयोग के मूल्यवान स्रोत के रूप में काम करेगा।

- अनुसंधान और डेटा: वैश्विक मंचों पर भारतीय समाज सेवी क्षेत्र से महिला नेताओं की भागीदारी के प्रभाव का निरंतर मूल्यांकन करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है। उनके योगदान, अनुभवों और सीख का डेटा एकत्र करना और उनका विश्लेषण करना, उसके प्रभाव के प्रमाण लैंगिक समानता पर व्यापक चर्चा में योगदान दे सकता है, भारत में युवाओं को कैरियर विकल्प के रूप में विकास क्षेत्र को चुनने और रूढ़िवादिता को तोड़ने के लिए प्रेरित कर सकता है।

- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ साझेदारी: लैंगिक समानता के लिए प्रतिबद्ध अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सांझेदारी भारतीय समाज सेवी क्षेत्र में कार्यरत महिला नेताओं की पहुंच और प्रभाव को बढ़ाता है। यह संयुक्त पहल विविध हितधारकों के संयुक्त प्रयासों के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान कर सकती है और वैश्विक स्तर पर समान भागीदारी के लिए अधिक अवसर भी प्रदान कर सकती है।

- युवा संलग्नता: भारतीय समाज सेवी क्षेत्र में युवा वर्ग महिला भागीदारी को प्रोत्साहित करने से महिला नेताओं की पाइपलाइन सुनिश्चित हो सकती है जो वैश्विक मंचों पर भाग लेने के लिए आवश्यक हैं। मेंटरशिप और कौशल-निर्माण के अवसर अगली पीढ़ी के नेताओं को तैयार करने में मदद कर सकते हैं। भारतीय सीएसओ में नेतृत्व की अगली शृंखला की कमी से निपटने के लिए युवा नेताओं को प्रवेश के पहले दिन से ही तैयार किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. https://www.unwomen.org/en/what-we-do/leadership-and-political-participation
2. https://www.unwomen.org/-/media/headquarters/attachments/sections/library/publications/2015/progress-of-the-worlds-women-2015-2016-en.pdf
3. https://www.weforum.org/reports/global-gender-gap-report-2023/
4. https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1057/fr.1993.22?journalCode=fera
5. https://citeseerx.ist.psu.edu/document?repid=rep1&type=pdf&doi=7faaf99e4910126e67f7cdc28bc1124b5f682ac7#page=60
6. https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/09614524.2019.1701988
7. https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2023/03/28/the-status-of-women-is-the-status-of-democracy-advancing-womens-political-and-civic-participation-and-leadership-at-the-second-summit-for-democracy/
8. https://womendeliver.org/wp-content/uploads/2016/09/2019-8-D4G_Brief_Political.pdf
9. https://www.adb.org/sites/default/files/publication/879896/civil-society-brief-india.pdf
10. https://www.un.org/womenwatch/daw/followup/beijing+5.htm
11. https://www.orfonline.org/research/promoting-womens-participation-in-the-labour-force/#:~:text=According%20to%20the%20World%20Bank,gap%20that%20exists%20in%20entrepreneurship.
12. https://www.weforum.org/agenda/2018/01/this-is-why-women-must-play-a-greater-role-in-the-global-economy/
13. https://journals.aom.org/doi/abs/10.5465/amd.2018.0112
14. https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/09614520600562454?journalCode=cdip20
15. https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/13552070512331332290?journalCode=cgde20
16. https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=eXCNAgAAQBAJ&oi=fnd&pg=PA189&dq=gender+mainstreaming+in+organizations+and+increasing+women+participation&ots=IeSgjN-77R&sig=xrTcKVIRou8-b2XscouvIKN3Ps0#v=onepage&q=gender%20mainstreaming%20in%20organizations%20and%20increasing%20women%20participation&f=false
17. https://onlinelibrary.wiley.com/doi/abs/10.1002/ace.332
18. https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S0277539516303259
19. https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=IXKQAAAAQBAJ&oi=fnd&pg=PA89&dq=barriers+to+women+participation+in+leadership&ots=wXJLHglYP0&sig=s5Fn7eMpzNLPTPxDVWFeNB-cmQY#v=onepage&q=barriers%20to%20women%20participation%20in%20leadership&f=false

HEINRICH BÖLL STIFTUNG
REGIONAL OFFICE NEW DELHI

हेनरिक बॉल स्टिफ्टंग के विषय में

हेनरिक बॉल स्टिफ्टिंग एक जर्मन संस्थान है और हरित आंदोलन का हिस्सा है, जो दुनिया भर में समाजवाद, उदारवाद और रूढ़िवाद की पारंपरिक राजनीति की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ है। हम एक ग्रीन थिंक-टैंक (हरित विशेषज्ञ समूह) और एक अंतरराष्ट्रीय नीति नेटवर्क हैं। हमारे मुख्य सिद्धांत पर्यावरण एवं स्थिरता, लोकतंत्र और मानवाधिकार, स्वाधीनता और न्याय हैं। हम लैंगिक समानता पर विशेष जोर देते हैं, जिसका अर्थ है सामाजिक उद्धार और महिलाओं तथा पुरुषों के लिए समान अधिकार। हम सांस्कृतिक और जातीय अल्पसंख्यकों के समान अधिकारों के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। अंत में, हम अहिंसा और सक्रिय शांति नीतियों को बढ़ावा देते हैं। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, हम उन लोगों के साथ रणनीतिक साझेदारी चाहते हैं जो हमारे मूल्यों को साझा करते हैं। हमारे संस्थापक, हेनरिक बॉल, उन मूल्यों को व्यक्त करते हैं जिनके लिए हम खड़े हैं: स्वतंत्रता संरक्षण, नागरिक साहस, सहिष्णुता, स्वतंत्र तर्क वितर्क एवं कला और संस्कृति के स्वतंत्र क्षेत्रों के रूप में विचार और कार्यान्वयन का मूल्यांकन। हमारा भारतीय कार्यालय 2002 में नई दिल्ली में स्थापित किया गया था।

VANI
VOICE OF THE VOLUNTARY SECTOR
CELEBRATING 35 YEARS OF SERVING THE INDIAN VOLUNTARY SECTOR

www.vaniindia.org

वाणी के विषय में

एक मंच के रूप में, यह स्वैच्छिकता को बढ़ावा देता है और स्वैच्छिक कार्रवाई के लिए क्षेत्र बनाता है। एक नेटवर्क के रूप में, यह देश में स्वैच्छिक कार्रवाई के वास्तविक राष्ट्रीय एजेंडे के निर्माण के लिए सामान्य क्षेत्रीय मुद्दों और चिंताओं के संगम को एक साथ लाने का प्रयास करता है। यह स्वैच्छिक क्षेत्र के विभिन्न प्रयासों और पहलों की कड़ी को भी सुगम बनाता है।